# 18

# अष्टाध्यायी का तृतीय और चतुर्थ अध्याय

## प्रस्तावना

इस तृतीय पाठ में अष्टाध्यायी के तृतीय, चतुर्थ अध्याय के सूत्रों की व्याख्या करेंगे। यहाँ छन्दसि शायजपि, छन्दस्युभयथा, हशे विख्ये च, शकि णमुल्कमुलौ इन सूत्रों का व्याख्यान करेंगे। उन विविध शब्दों में निपात विषय में विशेष रूप से आलोचना करेंगे, जो शब्द केवल वेद में ही होते हैं। वहां से यहाँ विविध प्रत्ययों के विषय में भी आलोचन करेंगे, उनमें से कुछ केवल वेद में ही होते हैं, कुछ लोक में भी होते हैं। और वे प्रत्यय विविध अर्थों तथा विभिन्न शब्दों में होते हैं। और उनमें से विशिष्ट रूपों की प्रक्रिया भी दिखायेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे–

- वेद में लेट्-लकार किस अर्थ में होता है जान पाने में;
- विकरण प्रत्ययों का छन्द के विषय में बहुल करके व्यत्यय होता है यह जान पाने में;
- छन्द के विषय में धातु के अधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुक आर्धाधातुक उभय संज्ञक होते हैं यह जान पाने में;
- छन्द के विषय के तुमर्थ में कौन से विशिष्ट प्रत्यय होते हैं यह जान पाने में;
- छन्द के विषय में कौन से विशिष्ट शब्दों का निपातन होता है यह जान पाने में;

टिप्पणी



## उपसंवादाशङ्कयोश्च ( 3.4.6 )

**सूत्रार्थ** – उपसंवाद (पणबन्ध) तथा आशङ्का गम्यमान हो तो भी धातु से वेद विषय में लेट् प्रत्यय होता है।

**सूत्रावतरणिका** – उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर भी लेट्-लकार के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

**सूत्रव्याख्या** – यह विधिसूत्र है। इससे लेट्-लकार का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। उपसंवादाशङ्कयोः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। उपसंवादाशङ्कयोः यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आती है। लिङर्थे लेट् इस सूत्र से लेट् की अनुवृत्ति आती है। पदयोजना इस प्रकार बनती है – छन्द विषय में उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर लेट् प्रत्यय होता है। उपसंवाद श्च आशङ्का च उपसंवादाशङ्के तयोः उपसंवादाशङ्कयोः इतरेतरयोग द्वंद्व समास। उपसंवाद पणबन्ध को कहते हैं। यदि आप मेरा यह काम करेंगे तो मैं आपको यह दूंगा ऐसे समय करण को पणबन्ध कहते हैं। आशङ्का का अर्थ सम्भावना होता है। प्रायः यह होगा ऐसा चिन्तन करना सम्भावना कहाता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर धातु से वेद विषय में लेट्-प्रत्यय होता है।

**उदाहरण** – उपसंवाद का उदाहरण – अहमेव पशूनामीशै इति। आशङ्का का उदाहरण – नेज्जिह्मायन्त्यो नरकं पताम इति।

## छन्दसि शायजपि ( 3.1.84 )

**सूत्रार्थ** – वेद विषय में श्ना के स्थान पर शायच् आदेश होता है तथा शानच् भी होता है।

**सूत्रावतरण** – वेद विषय में हल् से उत्तर श्न के स्थान पर हौ परे रहते शायच् विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

**सूत्रव्याख्या** – ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से श्ना प्रत्यय के स्थान पर शायच् और शानच् आदेश होते हैं। इस सूत्र में तीन पद है। छन्दसि शायच् और अपि। छन्दसि सप्तम्यन्तपद, शायच् प्रथमान्त पद और अपि अव्ययपद। हलः **श्नः शानज्झौ** सूत्र से हलः श्नः और हौ तीनों पदों की अनुवृत्ति आती है। छन्दसि हलः श्नः शायच् अपि हौ ये पदक्रम हुआ। सूत्र में अपि शब्द ग्रहण शानजादेश के भी विधानार्थ है। वेद विषय में हल् से उत्तर श्नः स्थान पर शायच् और शानच् आदेश होवे, हौ परे रहते। शायच् के शकार की **लशक्वतद्धिते** से इत् संज्ञा, चकार की **हलन्त्यम्** से। अब आय शेष रहता है।

**उदाहरण** – गृभाय।

टिप्पणी

**सूत्रार्थ समन्वय**- ग्रह् (ग्रह उपादाने) धातु के लोट् में अनुबन्धलोप होने से ग्रह् ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर सिप् होकर अनुबन्धलोप होने पर ग्रह् सि इस स्थित में **क्र्यादिभ्यः श्ना** से श्नाप्रत्यय होने से अनुबन्धलोप होकर ग्रह् ना सि होने पर **सेर्ह्यपिच्च** से सि के स्थान पर हि सर्वादेश से ग्रह् ना हि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से श्नास्थान पर शायच्-आदेश और अनुबन्धलोप होकर ग्रह् आय हि बना। फिर **अतो हे से** हि का लोप होने पर **ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च से** गकारोत्तरवर्ती रेफ के स्थान पर सम्प्रसारण होकर ऋकार हुआ गृ अ ह् आय एस स्थिति में **सम्प्रसारणाच्च** से पूर्वरूपैकादेश होने पर गृह् आय में हग्रहोर्भश्छन्दसि वार्तिक से हकार के स्थान पर भकारादेश सभी वर्णसम्मेलन और विभक्तिकार्य होने पर **गृभाय** रूप बना।

## व्यत्ययो बहुलम् ( 3.1.85 )

**सूत्रार्थ** - कि वेद विषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय हो।

**सूत्रावतरण** - कि वेदविषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय विधान के लिए ये सूत्र बना है।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे शपादि विकरण प्रत्ययों का व्यत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। व्यत्ययः प्रथमान्त पद और बहुलम् अव्यय पद। **छन्दसि शायजपि** सूत्र से छन्दसि पद अनुवर्त है। विकरणानाम् ये अधयाहार है। विकरणानां बहुलं व्यत्ययः छन्दसि ये पदयोजना हुई। व्यतिगमनम् व्यतिहारः व्यतिक्रमो वा व्यत्ययः। सूत्रार्थ हुआ कि वेदविषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय हो।

**उदाहरण** - भेदति।

**सूत्रार्थसमन्वय**- भिद् (भिदिर् आवरणे) धातु से लट्लकार में अनुबन्धलोप होने पर भिद् ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर तिप् तथा अनुबन्धलोप होने पर भिद् ति इस स्थिति में भिद्-धातु रुधादिगण में पठित होने से **रुधादिभ्यो श्नम्** से प्राप्त श्नम्-विकरण बाधित होकर प्रकृतसूत्र से व्यत्यय से शप्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होने पर भिद् अ ति इस स्थिति में शप् के सार्वधतुक होने से **पुगन्तलघूपधास्य च** से भिद् के लघूपधा इकार के स्थान पर गुण एकार हुआ, सभी वर्ण के सम्मेलन से **भेदति** रूप सिद्ध हुआ। श्नम् करने पर **भिनत्ति** रूप होता है।

## छन्दस्युभयथा ( 3.4.117 )

**सूत्रार्थ** - वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों संज्ञा वाले हों।

**सूत्रावतरण** - वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों

टिप्पणी



संज्ञा के विधान के लिए ये सूत्र पढ़ा गया है।

**सूत्रव्याख्या** - ये संज्ञासूत्र है। इससे सार्वधातुकसंज्ञा और आर्धधातुकसंज्ञा दोनों होती है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि और उभयथा। छन्दसि इति सप्तम्यन्तपद। उभयथा इति अव्यय। उभयथा शब्द का तात्पर्य सार्वधातुक और आर्धधातुक है। धातोः, प्रत्ययः, परः इन तीन का अधिकार है। पदों का क्रम होगा -छन्दसि धातोः परः प्रत्ययः उभयथा। सूत्रार्थ होगा कि वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों संज्ञा वाले हों।

**उदाहरणम्** - वर्धान्तु।

**सूत्रार्थसमन्वय**- णिजन्त वृध्-धातु से लोट लकार में अनुबन्धलोप होकर वृध् इ ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर प्रथमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में झि-प्रत्यय होने पर वृध् इ झि हुआ। **कर्तरि शप्** से शप् होकर अनुबन्धलोप होकर वृध् इ अ झि बनता है। फिर झकार के स्थान पर अन्तादेश होने से वृध् इ अ अन्त् इ इस स्थिति में **एरुः** से इकार के स्थान पर उकार होकर वृध् इ अ अन्त् उ बना। यहां **तिङ्शित्सार्वधातुकम्** से शप् की सार्वधतुकसंज्ञा है। किन्तु प्रकृतसूत्र से शप् की आर्धधातुकसंज्ञा भी होती है। फिर आर्धधातुकशप् परे होने से णेरनिटि से णि इकार का लोप होता है। फिर (अ अन्त्) इस दशा में **अतो गुणे** से पररूपैकादेश होकर अकार होने पर वृध् अन्त् उ होकर सर्ववर्णसम्मेलन से **वर्धन्तु** रूप बना। लोक में तो **वर्धयन्तु** रूप है। यहाँ शप् सार्वधातुक ही होता है। उससे शप् के आर्धधातुकत्व के अभाव से **णेरनिटि** की प्रवृत्ति नहीं हुई और जिससे णिलोप भी नहीं हुआ।

## तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः॥ (3.4.1)

**सूत्रार्थः** वेदविषय में तुमर्थ में से-सेन् असे-असेन्- क्से-कसेन् अध्यै-अध्यैन्- कध्यै-कध्यैन्- शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेन् प्रत्यय हों।

**सूत्रावतरणम्** - वेदविषय में तुमर्थ में सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेन्-प्रत्ययों के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे से सेन् असे इत्यादि प्रत्यय होते है। इस सूत्र में दो पद है। तुमर्थेये सप्तम्यन्त पद है और सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ये प्रथमान्त पद है। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आई। **धातोः, प्रत्ययः और परश्च** ये तीन सूत्रों का अधिकार है। और अब सूत्रार्थ होता है कि वेदविषय में तुमर्थ में से-सेन् असे-असेन्-क्से-कसेन् -अध्यै-अध्यैन्- कध्यै- कध्यैन्- शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेन् प्रत्यय हों।

**उदाहरण** - वक्षे।

टिप्पणी

सूत्रार्थसमन्वयः - वच्-धातु से तुमर्थ में पूर्वोक्तसूत्र से से-प्रत्यय हुआ। वच् से इस स्थिति में **चोः कुः** से चकार के स्थान पर ककार होने से वक् से इस स्थिति में **आदेशप्रत्यययोः** से सकार के स्थान पर षकार होने पर वक्षे ये एजन्त कृदन्त समुदाय बनता है। उसके बाद कृदन्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सु विभक्ति होकर वक्षे स्। फिर वक्षे के एजन्तकृदन्त समुदाय होने से **कृन्मेजन्तः** से अव्ययसंज्ञा होकर **अव्ययादाप्सुपः** से सु का लुक् होकर और **वक्षे** रूप बना। लोक में तो **वक्तुम्** रूप बनता है। इसी प्रकार **जीवसे (जीवितुम्)** इत्यादि उदाहरण है।

## द्यृशे विख्ये च॥ (3.4.11)

**सूत्रार्थ** - वेदविषय में तुमर्थ में द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है।

**सूत्रावतरण** - वेद विषय में द्रष्टुम् अर्थ में द्यृशे और विख्यातुम् अर्थ में विख्ये इनके निपातन के लिए ये सूत्र बनाया। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्त वैतवेङ्तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है। इस सूत्र में तीन पद है। द्यृशे, विख्ये और च। दो पद प्रथमान्त और च अव्ययपद है। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। फिर सूत्रार्थ हुआ कि वेदविषय में तुमर्थ में द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है।

**उदाहरण**- द्यृशे। विख्ये।

**सूत्रार्थसमन्वय**- वेद में द्यृश्- धातु से तुमर्थ में के-प्रत्यय और अनुबन्धलोप होकर द्यृश् ए ऐसा होने पर पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **द्यृशे** रूप सिद्ध होता है। वि-पूर्वक ख्या-धातु के- प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर वि ख्या ए। फिर **आतो लोप इटि च** से ख्या के आकारलोप होकर वि ख्य् ए बना तथा सर्ववर्णसम्मेलन और पूर्ववत् विभक्तिकार्य होकर विख्ये रूप सिद्ध होता है।

## शकि णमुल्कमुलौध् (3.4.12)

**सूत्रार्थ** - शक्नोति धातु उपपद होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय होते है।

**सूत्रावतरण** - शक्नोति धातु उपपद होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र बनाया।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे णमुल् और कमुल् ये दो प्रत्यय होते है। इस सूत्र में दो पद है। शकि सप्तम्यन्त पद और णमुल्कमुलौ प्रथमान्तपद है। **धातोः, प्रत्ययः और परश्च** सूत्रों का अधिकार है। और फिर सूत्रार्थ हुआ कि शक्नोति धातु उपपद

होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय होते है। णमुल् का णकार चुटू से इत्संज्ञक और लकार हलन्त्यम् से। और उकार उच्चारणार्थ है। अब केवल अम् ही शेष रहा। णमुल् के णित् होने से वृद्धि होती है। कमुल् का ककार **लशक्वतद्धिते** से इत्संज्ञक हुआ और लकार हलन्त्यम् से और उकार उच्चारणार्थ है। अब केवल अम् ही शेष रहा। कमुल् के कित् होने से गुणनिषेध।

**उदाहरण** - विभाजं नाशकत्। अपलुपं नाशकत्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- पूर्वोक्त प्रथम उदाहरण में अशकत् शक् धातु से लुङ् में प्रथमा एकवचनान्त रूप है। और वो उपपद है। अतः वि पूर्वक भज्-धातु से प्रकृत सूत्र से णमुल्-प्रत्यय होकर अनुबन्धालोप होने के बाद वि भज् अम् इस स्थिति में **अत उपधायाः** से उपधा को वृद्धि होने पर विभाजम् मान्तकृदन्त समुदाय बनता है। फिर इस समुदाय के कृदन्त होनेसे **कृत्तद्धितसमासाश्च** से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई। फिर **कृन्मेजन्तः** से अव्यय संज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर अव्ययादाप्सुपः से सु का लुक् हुआ और **विभाजम्** रूप बना। लोक में तो **विभक्तुम्** रूप बनता है।

द्वितीय उदाहरण में अशकत् उपपद है। इससे प्रकृतसूत्र से अप- पूर्वक लुप्-धातु से कमुल्- प्रत्यय होता है। फिर धातु के उकार के स्थान पर गुण प्राप्त होने पर कमुल्-प्रत्यय के कित् होने से गुणनिषेध होकर तथा पूर्ववत् विभक्तिकार्य होने पर **अपलुपम्** रूप सिद्ध हुआ। लोक में तो **अपलोप्तुम्** रूप बनता है।

## पाठगत प्रश्न 18.1

1. विभाजम् में कौनसा प्रत्यय है ?
2. शक्नोति उपपद होने पर णमुल-कमुल-प्रत्यय किस अर्थ में होते है ?
3. वेदविषय में विख्ये पद सही है या नहीं ?
4. छन्दस्युभयथा का क्या अर्थ है ?
5. गृभाय में किस सूत्र से कः प्रत्यय होता है ?

## ईश्वरे तोसुन्कसुनौ॥ ( 3.4.13 )

**सूत्रार्थ** - वेदविषय में ईश्वरशब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय होते है।

**सूत्रावतरण** - वेदविषय में ईश्वरशब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय के विधानार्थ ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे तोसुन् और कसुन् प्रत्यय होते है। इस सूत्र में

टिप्पणी

दो पद है। ईश्वरे सप्तम्यन्तपद और तोसुन्कसुनौ प्रथमान्त पद। छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति हुई। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ् तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति हुई। **धातोः, प्रत्ययः** और **परश्च** तीन सूत्रों का अधिकार है। अतः सूत्रार्थ हुआ की वेदविषय में ईश्वर शब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय होते है।

**उदाहरण** - ईश्वरो विचरितोः। विचरितोः अर्थात् विचरितुम्।

**सूत्रार्थसमन्वय** - ईश्वरोपपद रहते विपूर्वक चर्-धातु से प्रकृतसूत्र से तोसुन्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होने पर वि चर्तोस् इस स्थिति में **आर्धधातुकस्येड्वलादेः** से इडागम होकर विचरितोस् बना। इस समुदाय के कृदन्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च** से प्रातिपदिकसंज्ञा। फिर **कत्वातोसुन्कसुनः** से विचरितोस् की अव्ययसंज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर विचरितोस् स् रूप बनने पर **अव्ययादाप्सुपः** विभक्तिसंज्ञक सु के सकार के लुक् होने पर विचरितोस् के सकार के स्थान पर रुत्व तथा विसर्ग होकर **विचरितोः** रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **विचरितुम्** रूप बनता है।

## सृपितृदोः कसुन्॥ (3.4.17)

**सूत्रार्थ** - वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय हो।

**सूत्रावतरण** - वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या** - ये विधिसूत्र है। इससे सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। सृपितृदोः षष्ठ्न्तपद और कसुन् प्रथमान्तपद। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति। **भावलक्षणे स्थेण्-कृञ्-वदि-चरि-हु-तमि-जनिभ्यस्तोसुन्** सूत्र से भावलक्षणे की अनुवृत्ति। **धातोः प्रत्ययः परश्च** तीन सूत्रों का अधिकार है। अतः सूत्रार्थ हुआ वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय हो। कसुन् का ककार **लशक्वतद्धिते** से इत्संज्ञक तथा नकार **हलन्त्यम्** से। उकार उच्चारणार्थ है। केवल अस् ही शेष रहा। कित् होने से गुणाभाव।

**उदाहरणम्** - विसृपः। आतृदः।

**सूत्रार्थसमन्वयः**- विपूर्वक सृप्-धातु से भावलक्षण में तुमर्थ में प्रकृत सूत्र से कसुन्-प्रत्यय हुआ तथाअनुबन्धलोप होकर वि सृप् अस् इस स्थिति में कित् होने से गुण निषेध होकर विसृपस् कसुन्प्रत्ययान्त समुदाय बना। फिर इस समुदाय के कृदन्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च**

टिप्पणी



से प्रातिपदिक संज्ञा। फिर **कृत्वातोसुन्कसुनः** से विसृप् अस् की अव्यय संज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर विसृपस् स् हुआ और फिर अव्ययादाप्सुपः से विभक्तिसंज्ञक सु के सकार का लुक् होने पर पूर्ववत् प्रक्रिया से **विसृपः** रूप सिद्ध होता है।

आ-पूर्वक तृद्- धातु से प्रकृतसूत्र से कसुन्- प्रत्यय तथा पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **आतृदः** रूप बनता है।

## रात्रेश्चाजसौ॥ ( 4.1.31 )

**सूत्रार्थ**- स्त्रीत्वविवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में रात्रिशब्द से ङीप्-प्रत्यय हो, जस् विषय से अन्यत्र।

**सूत्रावतरण**- स्त्रीत्वविवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में जस् विषय से अन्यत्र रात्रि शब्द से ङीप्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**-ये विधिसूत्र है। इससे रात्रि- शब्द से ङीप-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद है। रात्रेः, च और अजसौ। रात्रेः पञ्चम्यन्तपद, च अव्ययपदम् और अजसौ सप्तम्यन्तपद। न जसिः अजसिः तस्मिन् अजसौ। इकार उच्चारणार्थ है। **नित्यं संज्ञाछन्दसोः** सूत्र से संज्ञाछन्दसोः पद की अनुवृत्ति हुई। **संख्याव्ययादेर्ङीप्** सूत्र से ङीप् की अनुवृत्ति हुई। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः** इनका अधिकार है - इसप्रकार वाक्ययोजना हुई -स्त्रियाम् संज्ञाछन्दसोः रात्रेः च ङीप् अजसौ। और फिर सूत्रार्थ बना - स्त्रीत्व विवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में रात्रिशब्द से ङीप्-प्रत्यय हो, जस् विषय से अन्यत्र।

**उदाहरणम्** - रात्री।

**सूत्रार्थसमन्वयः**- रात्रि शब्द से प्रकृत सूत्र द्वारा **ङीप्-प्रत्यय होकर** अनुबन्ध लोप होने पर रात्रि ई इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से इकार लोप होकर **रात्री** ङ्यन्त समुदाय हुआ। फिर सुप्रत्यय होकर रात्री सु इस स्थिति में उकार लोप होने पर **हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्** से सलोप होकर रात्री रूप सिद्ध हुआ और इसका वेद में प्रयोग जैसे - **रात्री व्यख्यदायती** इति। लोक में तो **कृदिकारादक्तिनः** गण सूत्र से **ङीष्प्रत्ययः** होता है। लोक में ङीष होने पर **आद्युदात्तश्च** से रात्रीशब्दः अन्तोदात्तान्त होता है। वेद में ङीप् होने पर रात्रीशब्द अनुदात्तौ **सुप्पितौ** से अनुदात्तान्त होता है।

**विशेष**-ध्यातव्य है कि सूत्र में अजसौ पाठ है। जिससे जस्प्रत्यय पर रहते इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है। अत एव **यास्ताः रात्रयः** में रात्रिशब्द से पर जस् प्रत्यय होने पर प्रकृतसूत्र से ङीप्-प्रत्यय नहीं होता है।

## नित्यं छन्दसि॥ ( 4.1.46 )

**सूत्रार्थः**- ब्रह्मवादिभ्य प्रातिपदिकों से वेदविषय में नित्य ङीष् हो।

**सूत्रावतरणम्**- स्त्रीत्व विवक्षा में वेदविषय में बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से नित्य ङीष् प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। नित्यम् प्रथमान्त पद। छन्दसि सप्तम्यन्तपद। बह्वादिभ्यश्च सूत्र से बह्वादिभ्यः पद, अन्यतो ङीष् सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति हुई। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार तथा प्रातिपदिकात् और अनुपसर्जनात् का भी अधिकार है। अधिकृत प्रातिपदिकात् का प्रातिपदिकेभ्यः पञ्चमी बहुवचनान्त में तथा अनुपसर्जनात् का अनुपसर्जनेभ्यः पञ्चमी बहुवचनान्त रूप परिवर्तित हुआ। इस सूत्र में अनुपसर्जन शब्द का अर्थ मुख्य व प्रधान है। **बहुशब्दः आदिः येषां ते बह्वादयः इति बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः बह्वादिभ्यः।** इसप्रकार सूत्र हुआ कि स्त्रीत्व विवक्षा में वेदविषय में बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से नित्य ङीष् हों।

**उदाहरण**- बह्वी।

**सूत्रार्थसमन्वय**- बहुशब्द में प्रकृतसूत्र से ङीष्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर बहु-ई इस स्थिति में **इको यणचि** से इक् के उकार के स्थान पर यण्-आदेश वकार होने पर बह्वी ङ्यन्त समुदाय होता है। फिर सु विभक्ति होकर पूर्ववत् प्रक्रिया से **बह्वी** रूपं सिद्ध हुआ। लोक में तो **वोतो गुणवचनात्** से वैकल्पिक ङीष्प्रत्यय होकर **बह्वी, बहु** दो रूप बनते है।

## भुवश्च॥ ( 4.1.47 )

**सूत्रार्थ**- वेदविषय में ङीष् प्रत्यय हो।

**सूत्रावतरण**- वेद में विभ्वी प्रभ्वी इत्यादि रूपसिद्धि के लिए भू-धातु से नित्य ङीष्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे भू- धातु से ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है- भुवः और च। भुवरू पञ्चम्यन्तपद तथा च अव्ययपद। **नित्यं छन्दसि** सूत्र से छन्दसि पद की तथा **अन्यतो ङीष्** सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार। और उसके प्रथमान्तपद होने पर, अनुपसर्जनात् पञ्चम्यन्त पद, प्रातिपदिकात् और पञ्चम्यन्तपद का अधिकार। अतः सूत्रार्थ बनता है - वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा में अनुपसर्जन भु शब्दान्त प्रातिपदिकों से नित्य ङीष्प्रत्यय होता है।

**उदाहरण**- विभ्वी। प्रभ्वी।

**सूत्रार्थसमन्वय**- विपूर्वक भू-धातु से **विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्** सूत्र से डुप्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप होने पर भू उ। फिर भू-धातु के ऊकार का लोप होकर डुप्रत्ययान्त विभु- में प्रकृतसूत्र से ङीष्-प्रत्यय होकर विभु ई इस स्थिति में इको यणचि सूत्र से इक् के उकार के स्थान पर यण वकार होकर विभ्वी ङ्यन्त समुदाय हुआ। फिर पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **विभ्वी** रूप सिद्ध हुआ। (चुटू से डुप्रत्यय का डकार इत्संज्ञक होने से तेन

टिप्पणी



उकारमात्र शेष रहा)

**इस प्रकार** - पूर्वक भू- धातु से **विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्** से डु- प्रत्यय होनेपर अनुबन्ध लोप होकर प्रभू उ इस स्थिति में धातु के ऊकार का लोप होकर तथा वर्णसम्मेलन से प्रभु हुआ। फिर प्रकृतसूत्र से ङीष्- प्रत्यय होनेपर अनुबन्धलोप होकर प्रभु ई में यण कार्य होकर प्रभ्वी ङ्न्तसमुदाय में पूर्ववत् विभक्तिकार्य होकर **प्रभ्वी रूप** सिद्ध होता है।

## दीर्घजिह्वी च छन्दसि॥ (4.1.55)

**सूत्रार्थ**- असंयोगोपध होने से ही ङीष्-प्रत्यय होता है।

**सूत्रावतरण**- दीर्घ जिह्व इस स्थिति में **स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्** से ङीष्-प्रत्यय प्राप्ति के अभाव में ङीष्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। दीर्घजिह्वी प्रथमैकवचनान्तपद। च अव्ययपदम् और छन्दसि सप्तम्यन्तपद। **अन्यतो ङीष्** सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति। स्त्रियाम् का अधिकार। प्रत्ययः और परश्च का अधिकार। और वे प्रथमांत होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार। और वो पञ्चम्यन्त है। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेदविषय में स्त्रीत्वविवक्षा में ङीष्-प्रत्यय हो।

**उदाहरण**- दीर्घजिह्वी।

**सूत्रार्थसमन्वय- दीर्घा जिह्वा यस्याः इति बहुव्रीहिसमास में स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद् असंयोगोपधात्** से ङीष्-प्रत्यय का विधान नहीं होता है। क्योंकि उपध में संयोग है। **स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद् असंयोगोपधात्** से असंयोगोपध होने से ही ङीष्-प्रत्यय होता है। अतः ङीष्-प्रत्ययविधान के लिए प्रकृतसूत्र बना। उसके बाद ङीष्-प्रत्यय और अनुबन्ध लोप होकर दीर्घजिह्व ई इस स्थिति में यस्येति च से भसंज्ञक अकार का लोप होने पर सर्ववर्णसम्मेलन से दीर्घजिह्वी ङ्यन्तसमुदाय बना और फिर पूर्ववत् विभक्तिकार्य होने पर **दीर्घजिह्ववी** रूप सिद्ध हुआ।

## कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि॥ (4.1.71)

सूत्रार्थः- ऊङ् हो।

**सूत्रावतरण**- वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा से कद्रु और कमण्डलु शब्द प्रातिपदिकों से परे ऊङ्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र बना।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ऊङ् - प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। **कद्रुकमण्डल्वोः छन्दसि** ये सूत्रगत पदच्छेद है। कद्रुकमण्डल्वोः षष्ठीद्विवचनान्तपद तथा छन्दसि सप्तम्यन्तपद है। **ऊङुतः** सूत्र से ऊङ् की अनुवृत्ति। **स्त्रियाम्** का अधिकार। **प्रत्ययः,**

टिप्पणी

**परः** का अधिकार और वे प्रथमान्त होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार है और वो पञ्चमन्त है। अतः सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा से कद्रु और कमण्डलु शब्द प्रातिपदिकों से परे ऊङ्-प्रत्यय होता है। ऊङ् का ङकार **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञक हुआ तो ऊमात्र शेष रहा।

**उदाहरण**-कद्रूः।

**सूत्रार्थसमन्वय**- कद्रु शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में प्रकृतसूत्र से ऊङ्-प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होकर कद्रु ऊ इस स्थिति में सवर्ण दीर्घ होकर कद्रू ऊङन्त समुदाय बना। फिर **प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्** इस परिभाषा की सहायता से सु में रुत्व विसर्ग होने पर **कद्रूः** रूप बना। इस प्रकार **कमण्डलूः** को भी जाने।

## छन्दसि ठञ्॥ (4.3.19)

**सूत्रार्थ**- वेद विषय में वर्षा शब्द से ठञ् हो।

**सूत्रावतरण**- लोक में वर्षा शब्द से ठक्-प्रत्यय होता है। परन्तु वेद में वर्षा शब्द से ठञ्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ठक्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। ये सूत्र **वर्षाभ्यष्ठक्** सूत्र का अपवाद है। छन्दसि सप्तम्यन्तपद। ठञ् प्रथमान्तपद। **वर्षाभ्यष्ठक्** सूत्र से वर्षाभ्यः की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार। वे प्रथमान्त होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार। **शेषे, तद्धिताः** दोनों का भी अधिकार। इसप्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद में वर्षादि प्रातिपदिकों से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- वार्षिकम्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- **वर्षासु भवम्** इस विग्रह में वर्षा शब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय होनेपर वर्षा ठञ् इस स्थिति में ञ्कार की **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होकर वर्षा ठ इस स्थिति में **ठस्येकः** से ठ के स्थान पर इक-आदेश तथा वर्षा इक इस स्थिति में **यचि भम्** से वर्षा की भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से आकार का लोप होकर वर्ष् इक इस स्थिति में अकार को **तद्धितेष्वचामादेः** सूत्र से वृद्धि आकार होकर वर्ष् इक इस स्थिति में सु-प्रत्यय होकर उसके स्थान पर अम् हुआ फिर वार्ष् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **वार्षिकम्** रूप सिद्ध हुआ। लोक में भी ठक्प्रत्यय होने पर **वार्षिकम्** रूप होता है। तो किर क्या भेद है ठञ् और ठक् में? ठञ् **ञ्नित्यादिर्नित्यम्** से आद्युदात्त है परन्तु ठक् कित् होने से अन्तोदात्त है इस प्रकार केवल स्वर भेद है। ठञ् होने पर **तद्धितेष्वचामादेः** से आदि अच् को वृद्धि तथा ठक् होने पर **किति च** से आदि अच् को वृद्धि।

## वसन्ताच्च॥ (4.3.20)

टिप्पणी



**सूत्रार्थः**- वेद में ऋतुवाचक वसन्त शब्द से ठञ् हो।

**सूत्रावतरण**-ख्र वेद में (काल) ऋतुवाचक वसन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ठञ्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। वसन्तात् च ये सूत्रगत पदच्छेद है। वसन्तात् पञ्चम्यन्तपद। च अव्ययपद। **छन्दसि ठञ्** सम्पूर्ण सूत्र यहाँ अनुवृत्त है। **कालाट्ठञ्** इस सूत्र से कालात् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः और परश्च** का अधिकार और वे प्रथमान्त पद होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार तथा वो पञ्चम्यन्तपद है। **शेषे, तद्धिताः** का भी अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद में (काल) ऋतुवाचक वसन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- वासन्तिकम्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- **वसन्तर्तौ भवम्** इस व्युत्पति से ऋतुवाचि वसन्त शब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय होने पर वसन्त ठञ् इस स्थिति में ञ्कार का **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होकर वसन्त ठ इस स्थिति में **ठस्येकः** से ठ के स्थान पर इक-आदेश होने पर वसन्त इक इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से अकार का लोप हुआ - अब वसन्त् इक इस स्थिति में वकारोत्तरवर्ति अकार को **तद्धितेष्वचामादेः** से वृद्धि आकार हुई - वासन्त् इक इस स्थिति में तद्धितान्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च** सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सु-प्रत्यय तथा उसके स्थान पर अम्द्य वासन्त् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **वासन्तिकम्** रूप सिद्ध हुआ।

## हेमन्ताच्च॥ (4.3.19)

**सूत्रार्थ**- वेद विषय में हेमन्त शब्द से ठञ्-प्रत्यय हो।

**सूत्रावतरणम्**- वेद में हेमन्त शब्द से ठञ्-प्रत्ययविधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ठञ्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। हेमन्तात् च सूत्रगत पदच्छेद है। हेमन्तात् पञ्चम्यन्तपद और च अव्ययपद। **छन्दसि ठञ्** सम्पूर्ण सूत्र यहां अनुवृत्त है। **कालाट्ठञ्** सूत्र से कालात् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार **प्रत्ययः और परश्च** का अधिकार और वे प्रथमान्त पद होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार तथा वो पञ्चम्यन्तपद है। **शेषे, तद्धिताः** का भी अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद विषय में कालवाचक हेमन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- हैमन्तिकम्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- **हेमन्ते भवम्** इस व्युत्पत्ति से हेमन्त शब्द से प्रकृत सूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय

टिप्पणी

होकर हेमन्त ठञ् इस स्थिति में ञ्कार का **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होने पर हेमन्त ठ इस स्थिति में ठस्येकः से ठ के स्थान पर इक-आदेश होकर हेमन्त इक इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से तकारोत्तरवर्ति अकार का लोप होने पर हेमन्त् इक इस स्थिति में एकार के स्थान पर **तद्धितेष्वचामादेः** से वृद्धि होने पर ऐकार होकर हैमन्त् इक इस स्थिति में सु-प्रत्यय होकर उसके स्थान पर अम् हुआ। हैमन्त् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **हैमन्तिकम्** रूप सिद्ध हुआ।

## द्क्यचश्छन्दसि॥ ( 4.3.150 )

**सूत्रार्थ**- विकार होने पर मयट् हो।

**सूत्रावतरण**- शरस्य (तृणविशेषस्य) विकारः विग्रह में मयट्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे मयट्- प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। द्क्यचश्छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। द्क्यचः पञ्चम्यन्त पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। **मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः इस** सूत्र से मयट् की अनुवृत्ति। **तस्य विकारः** सूत्र से विकारः की अनुवृत्ति। **अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः** सूत्र से अवयवे की अनुवृत्ति हुई। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार भी। और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **समर्थानां प्रथमाद्वा** से समर्थानाम् की अनुवृत्ति है। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ- वेद विषय में द्वयच् षष्ठी समर्थ प्रातिपदिक से विकार और अवयव अर्थ अभिधेय होने पर तद्धितसंज्ञक मयट्-प्रत्यय पर में हो। मयट् का टकार **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञक होने से मय शेष रहा।

**उदाहरण**- शरमयम्।

**सूत्रार्थसमन्वय**- **शरस्य (तृणविशेषस्य) विकारः** ऐसा विग्रह होने पर प्रकृतसूत्र से मयट्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर शर मय इस स्थिति में **शरमय** तद्धितान्तसमुदाय होकर सु विभक्तिकार्य होनेपर शरमयम् रूप बना।

## नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात्॥ ( 4.3.159 )

**सूत्रार्थः**- वेदे द्क्यचः उत्वात् वर्ध्रबिल्वशब्दात् विकारार्थे मयट् न।

**सूत्रावतरण**- वेदे द्क्यचः उकारवतः प्रातिपदिकात् वर्ध्रबिल्वशब्दात् विकारार्थे मयट्-प्रत्ययनिषेधार्थं सूत्रमिदं प्रणीतम्।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे मयट्- प्रत्यय का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है - न अव्ययपद और उत्वद्-वर्ध्र-बिल्वात् पञ्चम्यन्तपद। **द्वयचश्छन्दसि** सम्पूर्ण

टिप्पणी



सूत्र की अनुवृत्ति आती है। **मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः इत्यस्मात्** सूत्र से मयट् की अनुवृत्ति। **तस्य विकारः** सूत्र से विकारः की अनुवृत्ति आई। और उस विकार में सप्तम्यन्तरूप से परिवर्तन हुआ। **अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः** सूत्र से अवयवे की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** दो का अधिकार तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ कि वेद विषय में उकारवान् द्वयच् षष्ठी समर्थ प्रातिपदिक से वर्ध्र, बिल्व शब्द से विकार और अवयव अर्थ में तद्धितसंज्ञक मयट्-प्रत्यय पर में न हो।

**उदाहरणम्**-वार्ध्री।

**सूत्रार्थसमन्वयः- वर्ध्रस्य विकारः** विग्रह में **द्व्यचश्छन्दसि** से प्राप्त मयट्-प्रत्यय का निषेध होने पर अण्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप हुआ। वर्ध्र अ इस स्थिति में अण् के अकार से पूर्ववर्ति भसंज्ञक अकार का लोप होने पर वर्ध्र बनता है। फिर **तद्धितेष्वचामादेः** से वकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर वृद्धि आकार होने पर वर्णसम्मेलन से वार्ध्र बना। अब **टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः** से ङीप-प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप और वार्ध्र ई इस स्थिति में ईकार से पूर्ववर्ति भसंज्ञक अकार का लोप होने पर वर्णसम्मेलन से **वार्ध्री** हुआ। अब विभक्ति कार्य होकर वार्धी रूप सिद्ध हुआ।

## ढश्छन्दसि॥ ( 4.4.106 )

**सूत्रार्थ**- सप्तम्यन्त समर्थ से साधु अर्थ में वेद विषय में सभाप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ढप्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण**- सभाप्रातिपदिक से साध्वर्थ में ढ- प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ढ- प्रत्यय होता है। सूत्र में दो पद है। **ढः और छन्दसि** सूत्रगतपदच्छेद है। ढः प्रथमान्तपद और छन्दसि सप्तम्यन्तपद। **सभाया यः** सूत्र से सभायाः की अनुवृत्ति। **तत्र साधुः** सूत्र से साधुः की अनुवृत्ति। और वो सप्तम्यन्तरूप में विपरिणमित होते है। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ कि- साधु अर्थ में वेद विषय में सभाप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ढप्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- सभेयः।

**सूत्रार्थसमन्वय- सभायां साधुः** इस विग्रह में सभाशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ढप्रत्यय होने पर सभा ढ इस स्थिति में **आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्** से ढ के स्थान पर एयादेश होकर सभा एय इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से आकारलोप होने पर सभ् एय इस स्थिति में वर्णसंयोग होने से निष्पन्न सभेय शब्द

टिप्पणी

से सु विभक्तिकार्य होकर **सभेयः** रूप बना। लोक में तो यत्प्रत्यय होकर **सभ्यः** रूप बनता है।

## भवे छन्दसि॥ ( 4.4.190 )

**सूत्रार्थः**- वेद विषय में सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से भव अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण**- **मेघे भवः** इस विग्रह में सप्तम्यन्त भवेअर्थ में विद्यमान मेघ प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय विधन के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। भवे सप्तम्यन्तपद और छन्दसि भी सप्तम्यन्तपद है। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अतय सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से भव अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- मेघ्यः।

**सूत्रार्थसमन्वय**- **मेघे भवः** इस विग्रह में सप्तम्यन्त भवेअर्थ में विद्यमान मेघ प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय होने पर मेघ यत् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर मेघ य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर यस्येति च से अकारलोप फिर सर्ववर्णसम्मेलन से मेघ्य प्रातिपदिकात् से सु विभक्ति कार्य होकर **मेघ्यः** रूप बना।

## पाथोनदीभ्यां ड्यण्॥ ( 4.4.111 )

**सूत्रार्थ**- वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण**- वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे ड्यण्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। पाथोनदीभ्याम् पञ्चमीबहुवचनान्तपद और ड्यण् प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अत; सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- पाथ्यः।

टिप्पणी



**सूत्रार्थसमन्वयः- पाथसि भवः** इस विग्रह में भवे अर्थ में विद्यमान पाथस् प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र द्वारा ड्यण्-प्रत्यय होने पर पाथस् ड्यण् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर पाथस् य इस स्थिति में डित्त्वसामर्थ्य से टी लोप होकर पाथ् य इस स्थिति में सु और रुत्वविसर्ग होकर **पाथ्यः** रूप बना।

## सगर्भसयूथसनुताद्यन्॥ ( 4.4.114 )

**सूत्रार्थ**- सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय पर में हों।

**सूत्रावतरण**- वेद विषय में भव अर्थ में विद्यमान सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे यन् प्रत्यय होता है। ये दो पद वाला सूत्र है। सगर्भसयूथसनुतात् यन् ये सूत्रगत पदच्छेद है। सगर्भसयूथसनुतात् पञ्चम्यन्तपद और यन् प्रथमान्तपद है। **भवे छन्दसि** सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अत; सूत्रार्थ होता है - भव अर्थ में विद्यमान सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय पर में हों वेद विषय में।

**उदाहरण**- सगभ्र्यः। सयुथ्यः। सनुत्यः।

**सूत्रार्थसमन्वय- सगर्भे भवः** इस विग्रह में भव अर्थ में विद्यमान प्रकृतसूत्र से यन्-प्रत्यय होकर सगर्भ यन् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर सगर्भ य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से अकारलोप होने पर सगर्भ् य इस स्थिति में संयोग होकर सगभ्य शब्द से सु विभक्तिकार्य होकर **सगभ्र्यः** रूप बना। इसी प्रकार सयुथ्य:और सनुत्यः रूप सिद्ध हुए।

## बर्हिषि दत्तम्॥ ( 4.4.119 )

**सूत्रार्थ**- वेद विषय में बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में यत्-प्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण**- वेद विषय में सप्तम्यन्त समर्थ बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत् प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे यत- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। बर्हिषि सप्तम्यन्तपद और दत्तम् प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः**

टिप्पणी

सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अतः यह सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में सप्तम्यन्त समर्थ बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- वर्हिष्येषु।

**सूत्रार्थसमन्वय- बर्हिःषु दत्ता** इस प्रकार विग्रह होने पर दत्तार्थ में विद्यमान बर्हिष्-प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय होकर बर्हिस् यत् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर बर्हिस् य इस स्थिति में सकार के स्थान पर षकार होकर बर्हिष् य इस स्थिति में वर्णसंयोग से निष्पन्न बर्हिष्-प्रातिपदिक से सुप्-प्रत्यय होने पर विभक्तिकार्य होकर **बर्हिष्येषु** रूप बना।

## दूतस्य भागकर्मणी॥ ( 1.4.120 )

**सूत्रार्थ**- षष्ठ्यन्त समर्थ दूत-प्रातिपदिक से भाग और कर्म अभिधेय हो तो वेद विषय में यत्-प्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण- दूतस्य भागः कर्म वा** इस विग्रह में दूतशब्द से यत्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। दूतस्य षष्ठ्यन्तपद और भागकर्मणी प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से की **छन्दसि की** अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ होता है - षष्ठ्यन्त समर्थ दूत-प्रातिपदिक से भाग और कर्म अभिधेय हो तो वेद विषय में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरण**- दूत्यम्।

**सूत्रार्थसमन्वय- दूतस्य भागः कर्म वा** इस विग्रह में दूतशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा यत्-प्रत्यय होकर तकार की इत्संज्ञा तथा **तस्य लोपः** से उसका लोप होने पर दूत य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से अकारलोप होकर संयोग होने पर निष्पन्न दूत्य-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य होकर **दूत्यम्** रूप बना।

## रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये॥ ( 4.4.122 )

**सूत्रार्थ**- रेवती, जगती, हविष्या प्रातिपदिकों से प्रशस्य अर्थ में यत्-प्रत्यय पर में हो।

**सूत्रावतरण- रेवत्याः प्रशस्यम्** इस विग्रह में रेवतीशब्द से यत्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

**सूत्रव्याख्या**- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है।

रेवतीजगतीहविष्याभ्यः पञ्चम्यन्तपद और प्रशस्ये सप्तम्यन्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से की **छन्दसि की** अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो बहुवचनान्त में परिवर्तित हो जाता है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में रेवती, जगती, हविष्या प्रातिपदिको से प्रशस्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

**उदाहरणम्**- रेवत्यम्।

**सूत्रार्थसमन्वय- रेवत्याः प्रशस्यम्** इस विग्रह में रेवतीशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा यत्-प्रत्यय होने पर तकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा और **तस्य लोपः** से उसका लोप होने पर रेवती य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से ईकारलोप होकर रेवत् य स्थिति में संयोग होने से निष्पन्न रेवत्य प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य हुआ और **रेवत्यम्** रूप बना।

## पाठगत प्रश्न-18.2

1. **रात्रेश्चाजसौ** से कोन सा प्रत्यय होता है ?
2. हैमन्तिकम् में कौन सा प्रत्यय हुआ ?
3. वर्षासु भवम् ऐसे अर्थ में क्या रूप होगा? और कौन सा प्रत्यय है ?
4. वेद में ङीष-प्रत्यय विधायक एक सूत्र लिखो ?
5. नित्यं छन्दसि इसका क्या अर्थ है ?
6. दूत्यम् में किस सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ ?
7. सगभ्र्यः का विग्रह लिखो
8. भसंज्ञाविधायक एक सूत्र लिखो।
9. पाथोनदीभ्यां ड्यण् इस सूत्र का अर्थ लिखो।
10. मेघ्यः में यत्-प्रत्यय विधायक सूत्र क्या है ?
11. हैमन्तिकम् और वासान्तिकम् में यथाक्रम ठञ्-प्रत्यय विधायक सूत्र लिखो।
12. रेवत्यम् में कौनसा प्रत्यय है ? और किस सूत्र से होता है ?

## पाठ सार

इस पाठ में ये विषय आलोचित हैं। वेद विषय में पदबन्ध और आशङ्का में लेट्-

टिप्पणी

लकार होता है। वेद में हौ परे रहते हल् के उत्तर श्ना-प्रत्यय तो हो ही साथ ही शायच्- प्रत्यय भी होता है। **व्यत्ययो बहुलम्** सूत्र से वेड में विकरणप्रत्ययों का विकल्प से व्यत्यय होता है। **छन्दस्युभयथा** सूत्र से धात्वधिकार में उक्त प्रत्यय सार्वधातुकसंज्ञक भी होते है और आर्धधतुकसंज्ञक भी होते है। **तुमर्थे से....** इत्यादिसूत्र से से, सेन्, असे- इत्यादि प्रत्यय होते है। द्यृशे **विख्ये च** सूत्र से वेद में द्यशे विख्ये दो रूप निपातन किये जाते है। **शकि णमुल्कमुलौ** इत्यादि सूत्रों से वेद में णमुल्, कमुल्, तोसुन् कसुन्- इत्यादि प्रत्यय होते है। वेद विषय में जस्-भिन्न प्रत्यय परे रहते **रात्रेश्चाजसौ** सूत्र से रात्रि-शब्द से ङीष-प्रत्यय होता है। **नित्यं छन्दसि** सूत्र से बह्वादिभ्य छन्दसि विषय में नित्य ङीष-प्रत्यय होता है। **भुव श्च** इत्यादि सूत्रों द्वारा विभिन्न प्रातिपदिकों से वेद में विशेषरूप से ङीषदिप्रत्यय होते है। **छन्दसि ठञ्** इत्यादि सूत्रों द्वारा वर्षा इत्यादि प्रातिपदिकों से विभिन्न अर्थों में ठञादि तद्धितप्रत्यय होते है।

## पाठान्त प्रश्न

1. गृभाय रूप बनाओ।
2. **छन्दस्युभयथा** सूत्र की व्याख्या करो।
3. द्यृशे और विख्ये रूप बनाओ।
4. अपलुम्प और विभाज म् रूप ससूत्र बनाओ।
5. **ईश्वरे तोसुन्कसुनौ** सूत्र की व्याख्या करो।
6. रात्री रूप सिद्ध करो।
7. विभ्वी और प्रभ्वी रूप सिद्ध करो।
8. दीर्घजिह्वी रूप सिद्ध करो।
9. वासन्तिकम् रूप सिद्ध करो।
10. हैमन्तिकम् रूप सिद्ध करो।
11. वार्ध्री रूपम् सिद्ध करो।
12. **ढश्छन्दसि** सूत्र की व्याख्या करो।
13. पाथ्यः रूप सिद्ध करो।
14. रैवत्यम् रूप बनाओ।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

### उत्तरकूट-8.1

1. णमुल्-प्रत्यय।
2. तुमर्थ में।
3. साधु।
4. धात्वाधिकार में उक्त प्रत्यय सार्वधातुक और आर्धधातुक उभयसंज्ञक हो।
5. **छन्दसि शायजपि** से शायच्-प्रत्यय।

### उत्तरकूट-8.2

1. ङीप्।
2. ठञ्।
3. वार्षिकम्। ठञ्।
4. **दीर्घजिह्वी च छन्दसि।**
5. **बह्वादिभ्यश्छन्दसि** विषय में नित्य ङीष्।
6. दूतस्य भागकर्मणी।
7. सगर्भे भवः इति।
8. **यचि भम्**।
9. पाथस् और नदी प्रातिपदिकों से वेद विषय में भव अर्थ में ड्यण्-प्रत्यय हो।
10. भव अर्थ में वेद विषय में।
11. हेमन्ताच्च और वसन्ताच्च।
12. यत्प्रत्यय, **रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये** सूत्र से।

**अठ्ठारवाँ पाठ समाप्त**